अध्ययन सामग्री

विषय-हिन्दी (प्रतिष्ठा)

वर्ग - स्नातक खण्ड - 2

प्रश्न पत्र - चतुर्थ (IV)

(नाटक, निबंध और समीक्षा)

सुमन कुमारी

सहायक प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

एच.डी. जैन कॉलेज, आरा

मो० - 7091260073

'चन्द्रगुप्त'

जयशंकर प्रसाद

संबंधित प्रश्नोत्तर

'चन्द्रगुप्त'

नाट्य कला की दृष्टि से या रंगमंच की दृष्टि से या अभिनयता की दृष्टि से 'चन्द्रगुप्त' नाटक की समीक्षा कीजिए।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। भारतेन्दु युग नाटकों का प्रारंभिक युग है। इस युग में नाटक लिखने के प्रयोग हुए। प्रसाद जी ने हिन्दी नाटकों को शीर्ष-शिखर पर पहुँचा दिया। इसीलिए प्रसाद युग नाटक का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। मूलतः कवि होने के बावजूद प्रसाद जी ने दस से अधिक नाटक लिखे। जिसमें 'अजात शत्रु', 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं।

प्रसाद के अधिकांश नाटक ऐतिहासिक हैं। इन्होंने इतिहास की प्रमुख घटनाओं तथा प्रमुख पात्रों को लेकर उनके समय की राजनीतिक का जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया है। देश की अखण्डता के लिए, विलासी राजाओं के विनाश के लिए तथा बाहर के आक्रमण करने वाले शत्रुओं के लिए किस तरह हमारे ऐतिहासिक वीर युद्ध करते रहे। उन्हीं परिस्थितियों का विवरण इनके ऐतिहासिक नाटकों ~~में गड़े मुर्दे का उखाड़ने का काम किया है~~। ~~पर, यह आलोचना~~ के कथानक के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। आलोचकों का कहना है कि प्रसाद जी ने अपने ऐतिहासिक नाटकों में गड़े मुर्दे को उखाड़ने का काम किया है। पर, यह आलोचना सही नहीं है। सच तो यह है कि नाटककार प्रसाद ने ऐतिहासिक कथानकों के माध्यम से वर्तमान को उद्बोधित किया है, प्रेरित किया है। उन पात्रों के द्वारा वर्तमान को भारत को जगाया है। हम जानते हैं कि प्रसाद के सभी नाटक आजादी के पहले के नाटक हैं। इस दृष्टि से इनके नाटकों का महत्व और अधिक है। अतः कहा जाता है कि प्रसाद जी अपने नाटकों में पुराने होकर भी नये हैं तथा नये होकर भी पुराने हैं; प्रसाद जी नाटकों में प्राचीन

Scanned with CamScanner

होकर भी अर्वाचीन है तथा अर्वाचीन होकर भी प्राचीन है। इनके अधिकांश नाटक ऐतिहासिक हैं। रंगमंच की दृष्टि से इन्होंने नाटकों की रचना नहीं की है। फलस्वरूप इनके नाटकों का अभिनय या मंचीकरण आसानी से नहीं हो पाता है। इसके कई कारण हैं। प्रसाद युग में हिन्दी रंगमंच आज की तरह विकसित नहीं था। इन्होंने अपने नाटकों में पात्रों की संख्या भी ज्यादा रखी है। छायावादी कवि होने के कारण इनके नाटकों के संवाद दुरुह तथा काव्यात्मक हो गए हैं। इन्होंने युद्ध, मृत्यु आदि जैसी वर्जित घटनाओं का वर्णन भी अपने नाटकों में किया है। यही कारण है कि प्रसाद के नाटक पठनीय अधिक हैं अभिनय कम। अब हिन्दी रंगमंच हो चुका है तब थोड़ा आवश्यक सुधार करके इनके नाटकों का सफलता पूर्वक मंचीकरण किया जा सकता है।

'चंद्रगुप्त' नाट्य कला की दृष्टि से प्रसाद जी का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने अपने शोध प्रबंध 'प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन' में ~~लिखा~~ यह लिखा है कि- प्रसाद ने भारतीय और पाश्चात्य दोनों नाट्य कलाओं को 'चंद्रगुप्त' नाटक में ग्रहण किया है। वस्तुतः भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक के तीन तत्व होते हैं- 'कथावस्तु, नायक और रस'। इस दृष्टि से चंद्रगुप्त नाटक बहुत सफल है, इसकी कथावस्तु ऐतिहासिक है। इसमें प्रमुख तीन ~~तत्व होते हैं- कथावस्तु~~ घटनाएँ हैं- सिकंदर का आक्रमण, नन्द का विनाश कर चंद्रगुप्त का राजा होना और सिल्यूकस को पराजित, चंद्रगुप्त का कार्नेलिया से विवाह करना। इन तीनों घटनाओं में चाणक्य तथा चंद्रगुप्त की प्रमुख भूमिका है। दोनों संपूर्ण नाटक में सबसे अधिक सक्रिय पात्र है। चाणक्य की राजनीति और रणनीति से ही नन्द का नाश होता है। चन्द्रगुप्त राजा बनता है।

Scanned with CamScanner

सिल्यूकस पराजित होकर अपनी पुत्री की शादी चंद्रगुप्त से करता है। चाणक्य और चंद्रगुप्त ~~[illegible]~~ का चरित्र समानान्तर महत्वपूर्ण है। इसीलिए नायकत्व की समस्या है पर फल का भोगता होने के कारण चंद्रगुप्त ही नाटक का नायक है अन्य प्रधान पुरुष पात्रों में राक्षस, सिंहरण, सिकंदर, सिल्यूकस, पर्वतेश्वर आदि। प्रधान नारी पात्रों में कार्नेलिया, अलका, सुवासिनी, कल्याणी तथा मालविका है। इनके कुछ काल्पनिक पात्र भी है सिंहरण, अलका, मालविका आदि की कथा पूर्णतः काल्पनिक है। तथापि ऐतिहासिक घटनाओं में सरसता लाने के लिए काल्पनिक पात्रों की आवश्यकता होती है। इस संपूर्ण कथानक को जो चार अंकों तथा चौवालिस दृश्यों में विभाजित है। नाटककार ने सभी अवस्थाओं, सभी संधियों, सभी अर्थ प्रकृतियों के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस नाटक का प्रधान रस वीर है, पर श्रृंगार पर आश्रित है। कार्नेलिया और चंद्रगुप्त का प्यार, अलका और सिंहरण का प्यार, मालविका और कल्याणी के हृदय में चन्द्रगुप्त के लिए प्यार सुवासिनी और राक्षस का प्यार इस नाटक को श्रृंगारिक भावना से भर देते है। मुख्यतः वीर रस से युक्त पात्रों में चंद्रगुप्त, सिंहरण, सिकंदर, पर्वतेश्वर, अलका और कल्याणी है। नाटक का अंत सुखान्त है। यह सारे लक्षण भारतीय नाट्य कला के है युद्ध, संघर्ष, हत्या, द्वन्द तथा अन्तर्द्वन्द आदि पाश्चात्य नाट्य कला के प्रभाव है। कवि होने के कारण प्रसाद जी इस नाटक ~~[illegible]~~ में संवाद को कलात्मक भाषा में लिखा है। साथ ही साथ बारह गीतों के

माध्यम से प्रेम, सौन्दर्य, वेदना, राष्ट्रीयता तथा देशप्रेम की सफल अभिव्यंजना की है। देशकाल वातावरण तथा संकलनत्रय का पूर्ण निर्वाह कर प्रसाद ने अपनी नाट्य कला का सफल परिचय दिया है। नाटक का उद्देश्य राष्ट्रीयता की भावना है। देश को बाहरी और भीतरी आक्रमणों से बचाना है अस्तु, चंद्रगुप्त नाट्य कला की दृष्टि से एक संपूर्ण तथा अभिनय के अनुकूल नाटक है।

Scanned with CamScanner